यीशु: उसकी मृत्यु भविष्यवाणी का पूरा होना

हम देखते हैं कि यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने की पुराने नियम की भविष्यवाणियां कितने सजीव ढंग से पूरी होती हैं! हमारे उद्धारकर्त्ता के क्रूसारोहण का विवरण उसके जन्म से भी पहले भविष्यवाणी द्वारा प्रकट कर दिया गया था। की गई भविष्यवाणी और उसके पूरा होने के इन उदाहरणों का अध्ययन करें और परमेश्वर के ईश्वरीय पुत्र के रूप में यीशु में अपना विश्वास बढ़ने दें।[1]

मनुष्य जिसके पांव तले सब कुछ था (भजन संहिता 8:4-6)

उत्पत्ति 1:26-28 में, परमेश्वर ने आदम तथा उसके वंशजों को सारी पृथ्वी पर अधिकार करने की आज्ञा दी थी। भजन 8 मनुष्यजाति की सम्भाल के लिए परमेश्वर की स्तुति व धन्यवाद करते हुए उस आज्ञा को दोहराना ही है। आयत 4 में लिखा है:

> तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे,
> और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?

सृष्टि के आकार की तुलना में मनुष्य बहुत ही छोटा है। उसके आकार से देखा जाए तो वह संसार में महत्वहीन है। परन्तु, जैसा कि ''इस्राएल के मधुर गायक'' ने कहा है, मनुष्य की उच्चस्थिति दो ही स्थानों में देखी जाती है: (1) उसको स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाया जाना और (2) उसे सारे संसार में अधिकार दिया जाना। महान परमेश्वर ने ''सब कुछ [मनुष्य के] पांवों के नीचे कर दिया: इसलिए जब उसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, तो उसने कुछ भी रख न छोड़ा, जो उसके अधीन न हो'' (इब्रानियों 2:8)।

आदम से आज तक, मनुष्य प्रत्येक प्राणी को अपने अधीन करता आया है, और उसने भूमि, समुद्र, वायु और आकाश पर विजय पाई है। मानव जीवों द्वारा वातावरण पर इतनी विजय पाई जा चुकी है कि सबसे अधिक संदेह करने वाले लोग भी यह कहने से डरते हैं कि ऐसा या वैसा नहीं हो सकता है।

मनुष्य की उन्नति के बावजूद, आदम से लेकर यीशु के समय तक एक शत्रु था जिस

पर विजय नहीं पाई जा सकी थी, और वह शत्रु मृत्यु थी। यद्यपि दो आदमियों (उत्पत्ति 5:24; 2 राजा 2:11) को मरना नहीं पड़ा था, परन्तु वे केवल अपवाद ही थे; शेष सभी मनुष्यों के लिए, एक बार मरना ठहराया गया है (इब्रानियों 9:27)। विश्वासियों को छोड़कर, शेष लोगों पर मृत्यु की निश्चितता के कारण निराशा का कफन पड़ा हुआ था। मृत्यु के भय से, लोग जीवन भर दासत्व में रहते थे (इब्रानियों 2:15)। पुनरुथान की विरल घटनाएं (1 राजा 17:21, 22; 2 राजा 4:35; 13:21) सदा तक आशा नहीं दिला सकती थीं, क्योंकि उन जी उठने वाले लोगों को फिर से मरना होता था।[2] अभी भी मृत्यु का शासन था और लोगों की देहें नाश को देखती थीं। मनुष्य को मृत्यु के बन्धन से कैसे छुड़ाया जा सकता था? क्या परमेश्वर ने ''सब'' कुछ मनुष्य के वश में कर दिया था? क्या मनुष्य के अधिकार में कोई अतिविशाल, भयभीत करने वाला अपवाद था?

परमेश्वर की बुद्धि से, यीशु को पृथ्वी पर भेजा गया था। वह स्वर्गदूतों की तरह नहीं आया था। यदि स्वर्गदूतों की तरह आया होता तो उसे सब वस्तुओं पर अधिकार देने की ''मनुष्य'' को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा में शामिल नहीं किया जा सकता था (उत्पत्ति 1:26; भजन 8:4)। इसके अलावा, स्वर्गदूत मरते नहीं हैं (लूका 20:36)। यह स्वर्ग की बुद्धि की ही बात थी कि, मृत्यु के द्वारा एक मनुष्य मृत्यु पर सदा के लिए विजय पाए।

इसलिए, परमेश्वर ने यीशु को मनुष्य के रूप में भेजा जो लोहू और मांस में सहभागी है, मृत्यु के अधीन और उसका शिकार हुआ, ''ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे'' (इब्रानियों 2:14)। उसका पुनरुत्थान दूसरे सब लोगों से इस बात में भिन्न था कि ''उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की'' (रोमियों 6:9)। वह ''फिर कभी न सड़े [गा]'' (प्रेरितों 13:34)। वह यह प्रतिज्ञा कर सका, ''कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे'' (यूहन्ना 14:19)।

आज, यीशु के पुनरुत्थान के दो हज़ार वर्ष बाद भी, उत्पत्ति 1:26 और भजन संहिता 8:4 में मनुष्य को दिए गए परमेश्वर के वायदे को हमने पूर्ण रूप से पूरा होते नहीं देखा है। परन्तु, आज वह भय जाता रहा है, क्योंकि यीशु सदा तक जीवित रहने के लिए मुर्दों में से जी उठा है और उसके पास मृत्यु की कुंजियां हैं (प्रकाशितवाक्य 1:17, 18), इसलिए हम जानते हैं कि उसके द्वारा हमारी विजय का आश्वासन दिया गया है। जो प्रतिज्ञा परमेश्वर ने आरम्भ में की थी, उसे उसने पूरा कर दिया है! ''जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले आए, तब तक [यीशु] का राज्य करना अवश्य है। सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा, वह मृत्यु है। क्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया है'' (1 कुरिन्थियों 15:25-27क)।

इस प्रकार मूल रूप में सब जीवों के लिए की गई भविष्यवाणी एक विशेष मानव जीव अर्थात मनुष्य के लिए जो मसीह यीशु है, की गई थी। उसके बिना, परमेश्वर की प्रतिज्ञा जो आदम के साथ की गई थी और भजन लिखने वाले के द्वारा दोहराई गई थी, धराशायी हो जाती। परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमें प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विजय दिलाता है! उसकी

अद्‌भुत भविष्यवाणी के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो!

ठुकराया गया कोने के सिरे का पत्थर (भजन संहिता 118:22, 23)

भजन संहिता 118:22 में भविष्यवाणी की गई थी कि इमारत के पत्थर की तरह यीशु को भी ठुकराया जाएगा:

> राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था
> वही कोने का सिरा हो गया है।

यीशु ने इस भविष्यवाणी का हवाला उस समय दिया था जब उसने यहूदियों पर अपने ठुकराने वालों के रूप में अंगुली उठाई थी:

> क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा,
>
> कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था,
> वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया?
> यह प्रभु की ओर से हुआ,
> और हमारे देखने में अद्‌भुत है
> (मत्ती 21:42, 43क)।

यहूदी अधिकारियों के साथ बात करते हुए पतरस ने यीशु की तरह ही भजन संहिता 118:22, 23 को उन पर लगाया था: ''यह वही पत्थर है जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना और वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया'' (प्रेरितों 4:11)।

भजन संहिता 118:22, 23 के अलावा एक अन्य भविष्यवाणी में यीशु को पत्थर बताया गया था। सुसमाचार के भविष्यवक्ता यशायाह ने लिखा था कि यीशु ''ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान, और यरूशलेम के निवासियों के लिए फन्दा और जाल होगा। और बहुत से लोग ठोकर खाएंगे; वे गिरेंगे और चकनाचूर होंगे; वे फन्दे में फसेंगे और पकड़े जाएंगे'' (यशायाह 8:14ख, 15)।

स्पष्टत:, यीशु यह कहकर कि ''जो इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा: और जिस पर वह गिरेगा, उस को पीस डालेगा'' (मत्ती 21:44) यशायाह का वचन ही बता रहा था। यीशु द्वारा यशायाह की भविष्यवाणी को उन पर लागू करना इतना स्पष्ट था कि पास खड़े लोग समझ गए कि उसका क्या अर्थ था: ''महायाजक और फरीसी उसके दृष्टान्तों को सुनकर समझ गए, कि वह हमारे विषय में कहता है'' (मत्ती 21:45)।

बाद में पौलुस ने इस्राएलियों द्वारा यीशु को ठुकराए जाने को यशायाह के वचन का पूरा होना बताया: ''उन्होंने उस ठोकर के पत्थर पर ठोकर खाई। जैसा लिखा है; देखो मैं

सिय्योन में एक ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान रखता हूं'' (रोमियों 9:32ख, 33क)।

अन्त में, पतरस ने अपनी पहली पत्री में यीशु के ठुकराए जाने को पुराने नियम की इन दोनों भविष्यवाणियों का पूरा होना बताया:

... पर जो विश्वास नहीं करते उनके लिए

जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था,
वही कोने का सिरा हो गया।

और

ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है:

क्योंकि वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं
और इसी के लिए वे ठहराए भी गए थे (1 पतरस 2:7, 8)।

एक मित्र द्वारा पकड़वाया गया (भजन संहिता 41:9)

अबशालोम के एक सलाहकार अहीतोपेल को पुराने नियम का यहूदा कहा गया है। दाऊद व अबशालोम के समय उसकी सलाह को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था: ''... जो सम्मति अहीतोपेल देता था, वह ऐसी होती थी कि, मानो कोई परमेश्वर का वचन पूछ लेता हो; अहीतोपेल चाहे दाऊद को चाहे अबशालोम को, जो जो सम्मति देता वह ऐसी ही होती थी'' (2 शमूएल 16:23)। इसमें कोई संदेह नहीं कि आम तौर पर अहीतोपेल राजा के साथ भोजन करता था। बाद में वह अबशालोम के समर्थन में और दाऊद के विरुद्ध हो गया था। जब दाऊद को अपने भरोसेमंद दरबारी सलाहकार और भरोसे के आदमी के धोखे का पता चला तो उसने अपने मन की भावनाओं को भजन संहिता 41:9 में व्यक्त किया। उसे यह लिखने के लिए आत्मा की प्रेरणा मिली, ''मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था, उसने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है।''

यीशु यह भी जानता था कि एक झूठे मित्र द्वारा पकड़वाए जाने का क्या अर्थ था। स्पष्टत:, दाऊद को तब तक मालूम नहीं था जब तक वह पकड़वाया नहीं गया। इसके विपरीत यीशु आरम्भ से ही जानता था (यूहन्ना 6:64) कि उसके प्रेरितों में से कौन उसका विरोध करेगा और उसने अपने पकड़वाए जाने की बात पहले ही बता दी थी। यीशु ने पहले ही प्रकट कर दिया था कि उसके साथ क्या होगा ताकि दूसरे चेलों को उसके परमेश्वर होने का आश्वासन मिल जाए:

> मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता: परन्तु यह इसलिए है, कि पवित्र शास्त्र का वचन पूरा हो, कि जो मेरी रोटी खाता है, उस ने मुझ पर लात उठाई। अब मैं उसके होने से पहिले तुम्हें जताए देता हूं कि जब हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूं (यूहन्ना 13:18, 19)।

स्पष्ट है कि यीशु मानता था कि उसका पूर्वज्ञान उसके परमेश्वर होने का एक प्रमाण था।

पकड़वाने का दाम ठुकराया गया (जकर्याह 11:13)

जकर्याह ने काफ़ी स्पष्ट लिखा था कि यीशु को पकड़वाने वाला अपने सौदे से दुखी होकर उसके लहू के धन का क्या करेगा: ''मैंने चान्दी के उन तीस टुकड़ों को लेकर यहोवा के घर में कुम्हार के आगे फेंक दिया'' (जकर्याह 11:13)।

पुरातन काल की इस भविष्यवाणी के पूरा होने को मत्ती ने अप्रत्यक्ष कहा[3] :

> जब उसके पकड़वाने वाले यहूदा ने देखा कि वह दोषी ठहराया गया है तो वह पछताया और वे तीस चान्दी के सिक्के महायाजकों और पुरनियों के पास फेर लाया। और कहा, मैंने निर्दोषी को घात के लिए पकड़वाकर पाप किया है? उन्होंने कहा, हमें क्या? तू ही जान। तब वह उन सिक्कों को मन्दिर में फेंककर चला गया, और जाकर अपने आप को फांसी दी। महायाजकों ने उन सिक्कों को लेकर कहा, इन्हें भण्डार में रखना उचित नहीं, क्योंकि यह लोहू का दाम है। सो उन्होंने सम्मति करके उन सिक्कों से परदेशियों के गाड़ने के लिए कुम्हार का खेत मोल ले लिया। ... तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ; कि उन्होंने वे तीस सिक्के अर्थात उस ठहराए हुए मूल्य को (जिसे इस्राएल की सन्तान में से कितनों ने ठहराया था) ले लिए। और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी वैसे ही उन्हें कुम्हार के खेत के मूल्य में दे दिया (मत्ती 27:3-10)।

यहूदा का धन कुम्हार का खेत मोल लेने के काम आया। ''कुम्हार का खेत'' सम्भवत: कुम्हारों द्वारा मिट्टी खोदने के लिए इस्तेमाल किए गए प्रसिद्ध खेत को कहा गया था। शायद उसमें से मिट्टी निकाल ली गई थी और भूमि का दाम सस्ता हो गया था।[4]

विभिन्न अनुवादों में मत्ती द्वारा जकर्याह की भविष्यवाणी को यिर्मयाह की भविष्यवाणी कहने की बात पढ़ने वाला हैरान हो सकता है। हो सकता है कि मौखिक रूप से यिर्मयाह ने भी यही भविष्यवाणी की हो, परन्तु उसने इसे अपनी पुस्तक में नहीं लिखा। अधिक सम्भावना यह है कि मत्ती जकर्याह की लिखित भविष्यवाणी का उद्धरण दे रहा था।

मत्ती ने गलत लेखक की भविष्यवाणी क्यों मानी? वास्तव में, मत्ती ने नहीं माना। उसे तो पवित्र आत्मा की प्रेरणा थी और वह गलती नहीं कर सकता था (यूहन्ना 14:26; 16:13)। फिर, यदि उसने गलती की होती, तो आरम्भिक यहूदी नास्तिकों ने उसकी गलती

पकड़ ली होती और उसे बड़े-बड़े अक्षरों में छापा होता। उस पर ऐसा कोई आक्रमण होने के बारे में पता नहीं चलता।

अनुवादों में गलती कैसे हो गई? मत्ती के मूल लेखों के अस्तित्व की कोई जानकारी नहीं है। उनकी केवल प्रतियां ही उपलब्ध हैं, जिनमें सबसे पुरानी भी उसके लिखने के बहुत बाद की हैं। प्रतिलिपि बनाने वाले किसी व्यक्ति को पुराने नियम का उतना ज्ञान नहीं होगा जितना होना चाहिए था, और उसने गलती से ''जकर्याह'' के स्थान पर ''यिर्मयाह'' लिख दिया। बाद के प्रतिलिपियां बनाने वाले एक स्पष्ट गलती के बावजूद उसे सुधारने से हिचकिचाते होंगे।

कुछ पुरातन प्रतियों में मत्ती 27:9 में ''यिर्मयाह'' के स्थान पर ''जकर्याह'' मिलता है। हो सकता है कि ये मत्ती के मूल दस्तावेज़ की सही प्रतियां हों। फिर, और भी कई पुरातन प्रतियां हैं जो मत्ती 27:9 में किसी का नाम न लेकर केवल इतना ही कहती हैं कि ''भविष्यवक्ता के द्वारा'' यह भविष्यवाणी की गई थी। हो सकता है कि प्रतियां बनाने वालों ने मत्ती के मूल दस्तावेज की नकल ही की हो। इस विवरण की जो भी व्याख्या हो,[5] पकड़वाने के धन के उपयोग सम्बन्धी नबी की भविष्यवाणी मानने योग्य है।

उसके कपड़े बांटे गए (भजन संहिता 22:18)

पुराने नियम की कुछ भविष्यवाणियों के निकट तथा दूर, प्रत्यक्ष तथा परोक्ष, मुख्य तथा गौण दो अर्थ होते थे। भविष्यवाणियों का अर्थ केवल यीशु के बारे में भविष्यवाणी की तरह एक ही होता था। उदाहरण के लिए भजन संहिता 22:18 पर विचार कीजिए: ''वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं, और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं।'' यह भविष्यवाणी सबसे संक्षिप्त भविष्यवाणियों में से एक है। इसमें इस पूर्व ज्ञान की तरह कि यीशु पांच कपड़े पहने हुए होगा, चार सिपाहियों के कार्यदल द्वारा क्रूसारोहण के पूर्व ज्ञान को दिखाया गया लगता है। इसे चार भागों में बांटने से एक अच्छे भले पहनने योग्य कपड़े के चार चीथड़े बन जाने थे। यह सोचकर कि इस कपड़े का इस्तेमाल हो जाए, सिपाहियों ने चिट्ठी डालने का सबसे सही ढंग खोज निकाला और ऐसा ही किया गया:

> जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके, तो उसके कपड़े लेकर चार भाग किए हर सिपाही के लिए एक भाग और कुरता भी लिया, परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था: इसलिए उन्होंने आपस में कहा, हम इस को न फाड़ें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि वह किस का होगा। यह इसलिए हुआ, कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कि उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बांट लिए और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली: सो सिपाहियों ने ऐसा ही किया (यूहन्ना 19:23, 24)।

लोगों द्वारा अपमानित (भजन संहिता 22:6)

कई बार जब शिमी नंगे पांव दौड़ रहे, रोते हुए दाऊद को कोसता और उस पर पत्थर फेंकता (2 शमूएल 16:5, 6), तो यिशै के इस पुत्र को लगता कि यह ''मेरी नामधराई है,

और लोगों में मेरा अपमान होता है'' (भजन संहिता 22:6)। वह कहता,

> वे सब जो मुझे देखते हैं मेरा ठट्ठा करते हैं,
> और ओंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर हिलाते हैं,
> कि अपने को यहोवा के वश में कर दे वही उसको छुड़ाए,
> वह उसको उबारे क्योंकि वह उससे प्रसन्न है (भजन संहिता 22:7, 8)।

दाऊद के वंशज जिसके लिए भविष्यवाणी की गई थी, कि ''नामधराई ... और लोगों में मेरा अपमान'' होना था। उसके क्रूसारोहण के समय यह बात पूरी हुई:

> और आने जाने वाले सिर हिला हिलाकर उसकी निन्दा करते थे। और यह कहते थे, कि ... यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ। इसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा कर करके कहते थे, इस ने औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता। यह तो ''इस्राएल का राजा है''। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें। उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, यदि वह इस को चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, कि ''मैं परमेश्वर का पुत्र हूं'' (मत्ती 27:39-43)।

प्यासा (भजन संहिता 69:21)

दुखी करने वाली उदासी के समय, दाऊद ने अपने सहायकों की ओर व्यर्थ में देखा था। शत्रुओं ने उसे भूखा और प्यासा रखा था। ठट्ठे से, उसे *बरूथ* अर्थात शोक करने वालों को दिया जाने वाला भोजन दिया जाता था; परन्तु इसमें कड़वा पित्त मिला होता था। लोग कितने निर्दयी हो सकते हैं! फिर, पानी की जगह उन्होंने उसे सिरका दिया: ''और लोगों ने मेरे खाने के लिए इन्द्रायन [अर्थात पित्त] दिया, और मेरी प्यास बुझाने के लिए मुझे सिरका पिलाया'' (भजन संहिता 69:21)।

एक और पीड़ित अर्थात यीशु नासरी को भी सांत्वना देने वाला कोई नहीं था, जब उसे क्रूस पर लटकाया गया था। स्पष्टतः, उसके क्रूस पर चढ़ाने के शीघ्र बाद (लगभग प्रातः नौ बजे) उसे लुभावना दाखरस प्रस्तुत किया गया था। दाखरस परपीड़क लोगों को ठट्ठे में प्रस्तुत किया जाता था; इसमें मुर्र मिला होता था जिससे यह और भी कड़वा हो जाता था और पित्त और नागदौन की तरह पीने के योग्य नहीं रहता था (मरकुस 15:23)। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि यीशु ने इसे पीने से इन्कार कर दिया था। दाऊद के सताने वालों की तरह, उसे क्रूस पर चढ़ाने वाले अति दुष्ट लोग थे जो घावों पर नमक छिड़कने की तरह उसकी पीड़ा को और बढ़ा रहे थे।

छह घंटे बीत गए थे। दोपहर तीन बजे के लगभग, यीशु जानता था कि वह मरने वाला है (यूहन्ना 19:28)। वह यह भी जानता था कि भजन संहिता 69:21 का कुछ भाग ''और मेरी प्यास बुझाने के लिए मुझे सिरका पिलाया'' अभी पूरा नहीं हुआ था। उसने पित्त तो

स्वीकार कर लिया, परन्तु सिरका नहीं। ''पवित्र शास्त्र की बात पूरी'' करने के लिए (यूहन्ना 19:28) यीशु ने ज़ोर से यह कहकर कि ''मैं प्यासा हूं'' किसी को उसे पिलाने के लिए कुछ देने का इशारा किया। इस बार उसे सस्ती, तीखी दाखमधु दी गई जिसे सिरका कहा जाता था। स्पंज को जूफे पर रखकर उसके मुंह से लगाया गया। स्पंज चूसने के बाद, उसके मुंह से अन्तिम शब्द निकले: ''पूरा हुआ''; ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं'' (यूहन्ना 19:30; लूका 23:46)।

परमेश्वर की इच्छा पूरी करने वाला (भजन संहिता 40:6-8)

परमेश्वर ने इस्राएलियों को जानवरों के बलिदान लाने की आज्ञा दे दी थी (लैव्यव्यवस्था 16)। आराधक जब परमेश्वर (व्यवस्थाविवरण 10:12, 13) और अपने पड़ोसियों से प्रेम करते थे (लैव्यव्यवस्था 19:18; देखिए मीका 6:6-8) तो परमेश्वर इन बलिदानों को देखकर प्रसन्न होता था (भजन संहिता 51:19)। परन्तु, व्यक्तिगत प्रेम, समर्पण, शुद्धता तथा विनम्रता के अभाव में किसी भी प्रकार का पशुओं का बलिदान इस्राएल के पवित्र परमेश्वर के लिए घृणित था (भजन 51:16, 17; यशायाह 1:11-17; यिर्मयाह 6:20; 7:22, 23; आमोस 5:22-24)। जानवर तथा आराधना करने वाले की पूरी तरह से प्रतिबद्धता के इस महान सिद्धांत में भजन संहिता 40:6-8 का मूल आधार देखा जा सकता है:

> मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता
> तू ने मेरे कान खोदकर खोले हैं।
> होमबलि और पापबलि तू ने नहीं चाहा।
> तब मैं ने कहा, देख, मैं आया हूं;
> क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय में ऐसा ही लिखा हुआ है।
> हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूं;
> और तेरी व्यवस्था मेरे अन्तकरण में बसी है।

परमेश्वर ऐसी मेलबलियां या अन्नबलियां नहीं चाहता था जिनमें व्यक्ति की अपनी शुद्धता व समर्पण न हो। कपटी आराधकों की होमबलियां व पापबलियां उसे प्रसन्न नहीं कर सकती थीं। आज की तरह ही उस समय भी, परमेश्वर चाहता था कि आराधना करने वाला प्रत्येक व्यक्ति उसकी आराधना मन से करे।

भजन संहिता 40 में जिसे ''मैं आया हूं'' के रूप में दिखाया गया है। व्यवस्था की पुस्तक में यही आन्तरिक निर्णय लिखा गया था तथा इसी की सिफारिश की गई थी (व्यवस्थाविवरण 10:12, 13; 30:9, 10)। सही ढंग से सिखाए गए, स्वयंसेवक खुले हृदय तथा मुंह से कहते थे ''हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूं; और तेरी व्यवस्था मेरे अन्त:करण में बसी है।'' ऐसे ही एक आराधक तथा भजन 40 लिखने वाले के रूप में दाऊद परमेश्वर को जानवर भेंट करने से अधिक देने की बात कह रहा था।

परन्तु सच्चे मन से भी, वास्तव में पशुओं की भेंटों से पाप मिट नहीं सकते थे (इब्रानियों 10:3, 4)। वे तो हिसाब देने के दिन को केवल आगे ही कर सकते थे (इब्रानियों 10:1, 2)। इसलिए पूरे संसार का भविष्य भजन 40:6-8 के दूसरे तथा उच्च अर्थ पर टिका हुआ है। मसीह ने न केवल शुद्धता तथा निष्कपटता से परमेश्वर की इच्छा पूरी की बल्कि इससे भी बढ़कर, उसने एक मानवीय देह भेंट कर दी (इब्रानियों 10:5)।

एक अलग व अधिक महत्वपूर्ण अर्थ में जिसकी कल्पना पुराने नियम के किसी आराधक ने कभी नहीं की होगी, यीशु हमारा बलिदान बनने के लिए सहमत हो गया। संसार की नींव से पहले (देखिए 1 पतरस 1:18-20), उसने पिता से कहा, ''देख, मैं आ गया हूं, (पवित्र शास्त्र में मेरे विषय में लिखा हुआ है) ताकि हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं'' (इब्रानियों 10:7)। यीशु के लिए मानवीय देह तैयार होने पर, उसने अपने आपको इच्छापूर्वक क्रूस पर दे दिया। उसका अच्छा परिणाम यह हुआ कि आज मसीही लोग यह कहते हुए कि ''हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं'' (इब्रानियों 10:10) आनन्द कर सकते हैं।

सांप का सिर कुचलने वाला (उत्पत्ति 3:15)

यह कहकर कि, ''वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा'' (उत्पत्ति 3:15ख) परमेश्वर सर्प के साथ स्त्री के वंश के सम्बन्ध में बात कर रहा था। यह तर्कसंगत लगता ही नहीं कि यहां इसका अर्थ सांपों तथा मनुष्यों की स्वाभाविक शत्रुता है। यह स्पष्ट लगता है कि सर्प उस समय शैतान का प्रतिनिधि था (''वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इबलीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमानेवाला है''; प्रकाशितवाक्य 12:9)। यह कहकर, परमेश्वर शैतान तथा स्त्री के वंश के बीच युद्ध की भविष्यवाणी कर रहा था। स्त्री की अंश के पहले उदाहरण कैन ने शैतान से झगड़ा नहीं किया। बल्कि, कैन ने शैतान तथा पाप को अपने ऊपर अधिकार देकर हार मान ली थी (उत्पत्ति 4:7)। कैन उस दुष्ट से था (1 यूहन्ना 3:12); परिणामस्वरूप, वह स्त्री का अंश नहीं हो सकता था जिसके विषय में सर्प का सिर कुचलने की भविष्यवाणी की गई थी।

स्त्री के वंश का दूसरा उदाहरण हाबिल सारे संसार को भरमाने वाले से झगड़कर विजयी हुआ था। उसने अपने शारीरिक प्राण खोकर भी सर्प के आत्मिक सिर को कुचल दिया था। शायद उसके शारीरिक प्राण खोने का अर्थ शैतान द्वारा स्त्री के वंश की एड़ी को कुचलना है। हाबिल स्त्री की ''योग्य संतान'' था (देखिए मलाकी 2:15)।

व्यक्ति का परमेश्वर के लिए जीने और शैतान का विरोध करके सताव सहने का प्रत्येक उदाहरण उत्पत्ति 3:15 के एक भाग का पूरा होना है। परन्तु इस प्रकार के विजयी जीवन का सबसे अर्थपूर्ण उदाहरण यीशु है। स्त्री से जन्मा (गलतियों 4:4), वह हव्वा का वंशज था (लूका 3:23-38; देखिए उत्पत्ति 3:20)। जिस प्रकार से उसने शारीरिक मृत्यु सही, उसके लिए कहा जा सका कि शैतान ने उसकी एड़ी को डसा; परन्तु उस मृत्यु के द्वारा, यीशु ने उसे जिसे मृत्यु पर अधिकार था अर्थात शैतान का सर्वनाश कर दिया (इब्रानियों

2:14)। आज यीशु के पास मृत्यु तथा अधोलोक की कुंजियां हैं (प्रकाशितवाक्य 1:18)। वह सर्प का सिर कुचलकर, मृत्यु को मिटाकर सुसमाचार के द्वारा जीवन तथा अमरता को लाया है (2 तीमुथियुस 1:10)।

एक धार्मिक व्यक्ति का प्रत्येक उदाहरण शैतान के सिर को आत्मिक रूप से कुचलना है, परन्तु मृत्यु के सिर को केवल यीशु ने ही कुचला है। इस अर्थ में, केवल यीशु के लिए ही कहा जा सकता है कि उसने उत्पत्ति 3:15 को पूरा किया। इस सम्बन्ध में यीशु के विलक्षण होने के कारण ही, बाइबल के विद्वान बहुत देर से यह मानते रहे हैं कि उत्पत्ति 3:15 आने वाले मसीहा की सबसे पहली घोषणा है। यद्यपि नये नियम के किसी लेखक ने उत्पत्ति 3:15 को यीशु पर प्रत्यक्ष रूप से लागू नहीं किया, परन्तु आशा कि इसकी सांस इसे एक चमकदार पद बना देती है। इसमें शैतान पर निर्णायक विजय की आशा की भविष्यवाणी है: ''परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे'' (1 यूहन्ना 3:8)।

पाप-उठाने वाला विजयी (यशायाह 53)

सचमुच आठ शताब्दियां पहले, यशायाह ने यीशु की महिमा देखी और ''और उसने उसके विषय में बातें कीं'' (यूहन्ना 12:41)। यशायाह 53 के विवरण की व्यापकता पाठकों को यह सोचने पर बाध्य कर देती है कि वे भविष्यवाणी नहीं बल्कि इतिहास को पढ़ रहे हैं। अविश्वासी लोगों ने यीशु को निकालकर आकाश और पृथ्वी, जीवित तथा मृत लोगों में से (मूसा, उज्जिय्याह, जरुब्बाबेल, यिर्मयाह, सिदकिय्याह, यशायाह, यहोयाकीन और इस्राएल सहित) इस अध्याय की बातों से मिलाने की कोशिश की; परन्तु यीशु को छोड़ कोई भी उनके लिए उपयुक्त नहीं है। फिर, किसी के लिए भी योजना बनाकर किसी के जीवन को यशायाह 53 की बातों से नहीं मिलाया जा सकता। जिस भविष्यवक्ता ने यीशु को इतना स्पष्ट देखा उसकी भविष्यवाणी की बातें चौंका देने वाली हैं:

1. तुच्छ जाना गया
   (यशायाह 53:3; देखिए मत्ती 27:39-43)
2. दुखी पुरुष
   (यशायाह 53:3; देखिए मत्ती 26:38)
3. रोग से जिसकी पहचान थी
   (यशायाह 53:3; देखिए इब्रानियों 4:15)
4. मनुष्यों का त्यागा हुआ
   (यशायाह 53:3; देखिए यूहन्ना 1:10, 11)
5. दूसरों के दुख उठाने वाला
   (यशायाह 53:4; देखिए मत्ती 8:16, 17)
6. बिना किसी छल के
   (यशायाह 53:9; देखिए 1 पतरस 2:22)
7. अपने सताने वालों के सामने चुप रहा

(यशायाह 53:7; देखिए मत्ती 26:63; 27:12, 14)

8. दूसरों की जगह कोड़े खाने वाला
   (यशायाह 53:5; देखिए 1 पतरस 2:24, 25)
9. दूसरों के पाप उठाने वाला
   (यशायाह 53:5, 12; देखिए 1 कुरिन्थियों 15:3;
   2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 9:28; रोमियों 4:25)
10. अपराधियों के संग गिना गया
    (यशायाह 53:12; लूका 22:37)
11. अपराधियों के लिए बिनती करने वाला
    (यशायाह 53:12; देखिए लूका 23:34)
12. उसे न्याय न मिल पाया
    (यशायाह 53:8; देखिए मत्ती 27:24)
13. धनवान के साथ गाड़ा गया
    (यशायाह 53:9; देखिए मत्ती 27:57-60)
14. मुर्दों में से जी उठा
    (यशायाह 53:10; देखिए मरकुस 16:9)
15. उसे महान व्यक्ति के रूप में ऊंचा करके महिमा दी गई
    (यशायाह 53:12; देखिए फिलिप्पियों 2:9-11)

इथियोपिया के सरकारी अधिकारी ने फिलिप्पुस से पूछा था कि भविष्यवक्ता यशायाह 53 में अपने विषय में कह रहा था या किसी अन्य के विषय में। इस सुसमाचार प्रचारक के उत्तर को समझना आसान है: ''अब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया'' (प्रेरितों 8:35)। वह अपना मुंह खोलकर इस शास्त्र से किसी और के बारे में नहीं समझा पाया था।

विजय पाने वाला (भजन संहिता 68:18)

भजन संहिता 68:18क की सुन्दर तथा सांकेतिक भाषा में दाऊद ने परमेश्वर को एक विजयी राजा के रूप में प्रस्तुत किया था। उसने इस राजा का चित्रण युद्धबन्दियों को ले जाते, और अपने प्रशसकों से भेंटें स्वीकार करते महिमा के उच्चतम स्थानों में चढ़ते हुए किया था:

तू ऊंचे पर चढ़ा, तू लोगों को
बन्धुआई में ले गया;
तू ने मनुष्यों से, वरन हठीले मनुष्यों से भी भेंटें लीं,

उसी प्रकार से, यीशु कब्र में जाकर, मृत्यु, अधोलोक, और कब्र को बन्दी बनाकर विजयी होकर, जी उठा! संसार की सबसे ख़तरनाक जंग में, उसने कब्रों को शैतान के वश से छुड़ा लिया अर्थात उसने सुसमाचार से जीवन तथा अमरता को प्रकाश में लाकर

(2 तीमुथियुस 1:10) उसे जिसके पास मृत्यु की शक्ति थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर दिया (इब्रानियों 2:14)। तभी वह विजयी होकर यह ऐलान कर पाया, ''[मैं] जीवता हूं। मैं मर गया था, और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूं; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं'' (प्रकाशितवाक्य 1:18)। इस संसार के ईश्वर की शक्तियों तथा प्रधानताओं को हटाकर, वह सार्वजनिक रूप से अपनी महिमामय जीत को दिखा पाया था (कुलुस्सियों 2:15)।

केवल उस शानदार जीत से ही लोग मृत्यु के भय से छूटने के योग्य हुए हैं (इब्रानियों 2:15)। अमरता की उस खुली कारीगरी के कारण ही, लोग अब मृत्यु तथा खुली कब्र पर ठट्ठा कर सकते हैं, ''हे मृत्यु तेरी जय कहां रही?'' (1 कुरिन्थियों 15:55)। अब वे शोर मचा सकते हैं, ''परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है'' (1 कुरिन्थियों 15:57)। मसीही लोग उस अन्तिम विजय की राह देख सकते हैं, जब ''वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया'' (1 कुरिन्थियों 15:54)।

उस सब के कारण जो यीशु ने हमारे लिए किया, परमेश्वर ने मनुष्यों से महिमा और स्तुति तथा धन्यवाद की भेंटें ली हैं। पवित्र आत्मा की अगुआई से, इफिसियों 4:8 में पौलुस ने दाऊद के शब्दों को नये नियम की प्रासंगिकता में बदल दिया। उसने यीशु को भेंटें लेने के बजाय भेंटें देने वाला बताया। स्वर्गारोहण के दस दिन बाद, विजय पाकर मसायाह परमेश्वर के दाहिने हाथ जा बैठा, जहां से उसने अपना पवित्र आत्मा भेजा और मनुष्यों को दान दिए।

विशेष तौर पर, उसने अपने दूतों के रूप में प्रेरितों को दूसरे लोगों पर हाथ रखने और उन्हें आश्चर्यकर्म करने के दान देने की सामर्थ दी। जिन लोगों ने इन दानों को पाया उन्होंने भविष्यवक्ताओं, सुसमाचार प्रचारकों, पासबानों, तथा शिक्षकों के रूप में इनका इस्तेमाल किया (इफिसियों 4:8-13)। इन बहुत से दानों के देने से (1 कुरिन्थियों 12:4-11) सुसमाचार के दृढ़ करने और परमेश्वर के लोगों को सुधारने के लिए शिक्षा देने में लाभ मिला (इब्रानियों 2:1-4; रोमियों 12:3-8)।

ये दान केवल थोड़ी देर तक ही रहे, जब तक सारी सच्चाई अर्थात सम्पूर्ण प्रकाशन न दे दिया गया (यूहन्ना 16:13; 1 कुरिन्थियों 13:8-13)। परन्तु, पहली शताब्दी के उस अस्थाई काल में, उन्होंने प्रचार किए गए वचन को दृढ़ करने के ईश्वरीय उद्देश्य को भली भांति पूरा किया (मरकुस 16:17-20)। राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु ने स्वर्ग में जाकर आश्चर्यकर्म करने के दान दिए जिससे पृथ्वी पर लोगों को दान दिए गए।

कोने का अनमोल पत्थर (यशायाह 28:16)

अधिकांश यहूदियों के लिए, मसीह ठुकराया हुआ, इमारत का अवांछित पत्थर था, परन्तु दूसरे लोगों ने उसे कोने के अनमोल पत्थर के रूप में पहचान लिया। यशायाह ने यह भविष्यवाणी की थी:

इसलिए प्रभु यहोवा यों कहता है,
देखो, मैंने सिय्योन में नेव का एक पत्थर रखा है,
एक परखा हुआ पत्थर, कोने का अनमोल और अति दृढ़ नेव के योग्य पत्थर:
... (यशायाह 28:16)।

यीशु ने पतरस को यह बताकर कि ''... मैं इस पत्थर पर [पतरस पर, नहीं, बल्कि उस आधारभूत कथन पर जो उसके मुख से निकला था] अपनी कलीसिया बनाऊंगा'' (मत्ती 16:18ख)। कोई भी निरोल मानवीय संगठन, चाहे वह पतरस का हो या किसी और पापी का, पाप से शुद्ध हुए लोगों के संगठन के सामर्थ के लिए पर्याप्त नहीं होगा। ''क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है: कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता'' (1 कुरिन्थियों 3:11)। यद्यपि प्रेरित और भविष्यवक्ता यीशु अर्थात मुख्य पत्थर के साथ उसकी कलीसिया बनाने के लिए काम करें, परन्तु आराधना के योग्य परखा हुआ और अनमोल पत्थर केवल यीशु ही था (इफिसियों 2:20)।

इस सम्बन्ध में पतरस ने यशायाह 28:16 को उद्धृत करके यीशु के अनमोल तथा श्रेष्ठ होने की बात कह दी थी। उसने अपने आपको कलीसिया की नींव का पत्थर नहीं कहा क्योंकि वह यीशु को छोड़कर नींव के पत्थर के लिए किसी और के बारे में सोच भी नहीं सकता था:

इस कारण पवित्र शास्त्र में भी आया है:
कि देखो, मैं सिय्योन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर धरता हूं:
और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा।
सो तुम्हारे लिए जो विश्वास करते हो, वह तो बहुमूल्य है, ... (1 पतरस 2:6, 7क)।

पाद टिप्पणियां

[1]*टुथ फ़ॉर टुडे* (हिन्दी संस्करण) के अंक ''बाइबल के विषय में सीखना'' (पृष्ठ 37 से 44) में यीशु के पकड़वाए जाने, मृत्यु और पुनरुत्थान के सम्बन्ध में पुराने नियम की अतिरिक्त भविष्यवाणियों की समीक्षा की गई है। इन भविष्यवाणियों में ''तीस सिक्कों में बेचा गया'' (जकर्याह 11:12), ''परमेश्वर का त्यागा हुआ'' (भजन 22:1) और ''लाश जो फिर से जीवित हो गई'' (भजन 16:10) शामिल है। [2]यीशु के आने के बाद, अन्य लोग मुर्दों में से जी उठे: तबीता (या दोरकास; प्रेरितों 9:36-42), नाइन नगर की विधवा का पुत्र (लूका 7:11-16), याईर की बेटी (मरकुस 5:22, 23, 35-43; लूका 8:41, 42, 49-56), लाज़र (यूहन्ना 11:1-45), यीशु के क्रूसारोहण के समय जी उठने वाले लोग (मत्ती 27:50-53), यूतुखुस (प्रेरितों 20:9-12)। इनमें से सभी लोग फिर मर गए थे। [3]जकर्याह की भविष्यवाणी का सीधे-सीधे पूरा होना माना जाता है। राम शमरा की पट्टियों में मन्दिर के अधिकारी को *योत्सर* कहा गया है, जिसका अर्थ है, ''रूप देने वाला, ढालने वाला, कुम्हार।'' धातुओं को पिघलाने और ढालने वाला *योत्सर* होता था, और वह मन्दिर का भण्डारी भी होता था। रिवाइज्ड स्टैंडर्ड वर्ज़न में इस पुरातात्विक जानकारी का इस्तेमाल करके जकर्याह की भविष्यवाणी के

अनुवाद को नये सिरे से इस प्रकार लिखा है, ''मैंने चांदी के तीस शेकेल लिए और उन्हें प्रभु के घर के भण्डार में फेंक दिया।'' परन्तु, चाहे यह व्यवस्था सही भी हो, फिर भी मत्ती के शब्दों से पता चलता है परोक्ष रूप से यह जकर्याह की भविष्यवाणी का पूरा होना भी है, क्योंकि याजकों ने यहूदा से धन लेकर कुम्हार का खेत मोल ले लिया। [4]एल्बर्ट बार्नस *मैथ्यू एण्ड मार्क,* नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट (पृ. न. 1949; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: बेकर बुक हाउस, 1974), 302. [5]जैक पी. लूइस द्वारा कई सम्भावनाओं का निष्कर्ष निकाला गया था: मत्ती द्वारा उद्धृत संयुक्त पद जकर्याह 11:12, 13 का स्मरण दिलाता है और यहां पवित्र शास्त्र के लिए मत्ती के सामान्य फार्मूले के साथ उद्धृत किया गया है (तु. 1:22)। यह सप्तति अनुवाद और मूसा के शास्त्र दोनों से ही स्वतन्त्र है। मूसा द्वारा लिखित शास्त्र में 'potter' और सप्तति अनुवाद में 'treasury' है। इस वृत्तांत में यिर्मयाह के खेत खरीदने (यिर. 32:6से) और कुम्हार के घर जाने का स्मरण है (यिर. 18:2से)। प्रेरितों के [काम 1:20] से भजन 69:25 और 109:8 को यहूदा से जुड़ी घटनाओं की तरह उद्धृत किया गया है। यिर्मयाह से इस पद को जोड़ने की समस्या के समाधान के प्रयास के लिए निम्न सुझाव दिए जाते हैं: (1) कि प्रतिलिपि बनने में कोई गलती हुई है, (2) कि यिर्मयाह और जकर्याह भविष्यवक्ताओं के समूह के लिए एक के रूप में है, (3) कि बाद के किसी अशिक्षित लेखक ने यिर्मयाह जोड़ दिया, (4) कि जकर्याह ने यिर्मयाह के कथन को सम्भाल कर रखा है जो कहीं और नहीं मिल सकता, और (5) कि भविष्यवक्ताओं की सामग्री से इस्तेमाल करके, और यिर्मयाह से जोड़ के उद्धरण संयुक्त है। प्रश्न के हल का पता नहीं है। (*द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू भाग 2,* द लिविंग वर्ड कमैन्ट्री सीरीज़ [आस्टिन, टैक्स.: स्वीट पब्लिशिंग कं. 1976; रीप्रिंट, अबिलेन, टैक्स. एसीयू प्रैस, 1984], 175)।